28	कञ्का स वृष्टियुग् ॥ ११०७ ॥	
29	प्राणा नासायकृद्राभिपादाङुष्ठालगाचरः।	
30	म्रपानपवना मन्यापृष्ठपृष्ठात्तपार्षिगः ॥ ११०८ ॥	
31	समानः संधिक्द्राभिषू-	8
32	दाना वृच्चिराण्तरे।	
33	सर्ववग्वृत्तिको व्यान	
34	इत्यङ्गे पच्च वायवः ॥ ११०६ ॥	
35	ग्ररापमरवी सत्नं वार्तं च गक्नं कषः।	
36	कातारं विपिनं कदाः स्यात्षएडं काननं वनम् ॥ १११० ॥	- 17
37	द्वा द्वः	
38	प्रस्तारस्तु तृणाटव्यां कषा पि च।	
39	म्रपोपाभ्यां वनं वेलमारामः कृत्रिमे वने ॥ ११११॥	
40	निष्कुरस्तु गृन्हारामा	- 41
41	वाद्यारामस्तु पैार्कः।	S
42	म्राक्रीडः पुनह्यानं	

28. Wind mit Regen. — 29—34. Die 5 Winde des Körpers! der 1te, prâna, hat seinen Sitz in der Nasenspitze, in der Brust, im Nabel und in der Spitze der grossen Zehe; der 2te, apâna, im Nacken, im Rücken, im Kreuz und in den Hacken; der 3te, samâna, in den Gelenken, in der Brust und im Nabel; der 4te, udâna, zwischen Kopf und Brust; der 5te, vjâna, in der ganzen Haut. — 35—37. Wald (14 W.). — 38. Mit Gras bewachsener Wald (3 W.). — 39. Angepflanzter Wald, Garten (4 W.). — 40. Lustwald in der Nähe eines Hauses. — 41. Ausserhalb der Stadt gelegener Lustwald. — 42. Königlicher Park, zu dem auch die Unterthanen Zutritt haben (2 W.).